सायंस्मरणम्

ॐ असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।
भजेत्सामरस्यं जनो भारतेऽस्मिन् भवदेकराष्ट्रात्मिका सन्मतिर्नः
भवेदार्यधर्मो गुरुर्विश्वकार्ये प्रभो हिन्दूधर्मोऽधुना वर्धताम् ।।
।। हिन्दु धर्म की जय ।।

देवी अष्टभुजा स्तोत्र

नमो अष्टभुजे देवि लक्ष्मि पार्वति शारदे ।
बुद्धिवैभव दो मातर् हमें दो शक्ति सर्वदे ।।1।।

शीलरूपवती नारी तेरी ही प्रतिमा बने ।
धर्मसंस्कृतिरक्षा से धन्य भारत को करें ।।2।।

सुगंधित सुवर्णाभ सुकोमल सरोज जो ।
हस्त में धृत देता है पाठ निर्लेप तुम बनो ।।3।।

गीताप्रदीप जो देता विश्व को ज्ञानचेतना ।
कर में स्थित है तेरे स्नेहले अम्ब मंगले ।।4।।

शील-चारित्र्य की होवे आभा प्रसृत पावनी ।
अग्निकुंड इसीसे है प्रदीप्त धृत हाथ में ।।5।।

त्रिशूल है लिया मातर् दुष्ट-संहार हेतु से ।
खड्ग देवि लिया है जो सज्जनत्राणबुद्धि से ।।6।।

विरागविक्रमों की जो फहराये नभ में प्रभा ।
भगवा ध्वज है तूने हाथ में पकडा महा ।।7।।

ध्येय का ध्यान ना भूले कार्य में रत हो सदा ।
स्मरणी हाथ की देती हमें सन्देश सर्वदा ।।8।।

घण्टानाद हमें देता नित्य जागृति वत्सले ।
निद्रा आलस्य में खोवें अमोल क्षण ना कदा ।।9।।

सिंहवाहिनि अम्बे तू जगाती जनसिंह को ।
सटाओं से उठे सेना शक्तिसामर्थ्यदायिके ।।10।।

सती तू पद्मजा तू है, तू है देवी सरस्वती ।
परित्राणाय साधूनां काली माँ तू यशोमती ।।11।।

विनम्र भाव से देवि प्रणिपात सहस्रदा ।
सेविकाएँ करें आशीष देहि देवि सुमंगले ।।12।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।3।।

।। देवी अष्टभुजा की जय ।।